ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

20-08-2026

संगम्युग पर बापदादा ने सभी बच्चों को पहला व्रत दिया है - ''सम्पूर्ण पवित्र भव''। यह पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं है लेकिन ब्रह्मा बाप समान हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्व हो। हर कर्म में कर्मयोगी जीवन का अनुभव हो - इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी सो ब्रह्माचारी।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

At this confluence age, BapDada gave all of you children the first vow: "May you be completely pure." This vow of purity is not just a vow of celibacy, but, like Father Brahma, let every word have the vibration of purity merged in it. In every thought, let there be the importance of purity. In every action, let there be the experience of a karma yogi life. This is called being a Brahmchari (one who follows in the footsteps of Brahma) and brahmachari (one who is celibate).